

21/09/2020

Lecture Notes

M.A. IV Sem

Unit I

Topic —

Distinguish between Physical & Psychological environment of any organisation.

Dr. Kymani Sadhana Prasad

Associate Prof.

Dept. of Psychology

Q-4. Distinguish between ~~Physical~~ and Psychological environment of any organisation. Write about Psychological environment of work.

वैश्विक पर्यावरण - तथा मनोवैश्विक वातावरण है 'अदृश्य'।
जहाँ मनोवैश्विक वातावरण है 'दृश्य'।

संगठन के पर्यावरण (organizational environment) में कार्यकर्ता की दशा के समझने के लिए चारों ओर से भौतिक पर्यावरण (Physical environment) तथा उनसे सम्बन्धित हुए पर्यावरण के मानसिक पर्यावरण (Psychological environment) से है।

वर्षा के भौतिक पर्यावरण
(Physical environment of work situation)

कार्य की दशा में प्रमुख भौतिक वातावरण निम्नलिखित हैं -

- ① प्रकाश (Light)
- ② वायुसंचार (~~Light~~ Ventilation)
- ③ तापमान तथा आर्द्रता (Temperature & Humidity)
- ④ आर्द्रता
- ⑤ कोलाइल (Noise)

इनके अतिरिक्त कुछ अन्य भौतिक दशाएँ हैं :-

- ① कार्य के घण्टे (Working hours)
- ② कार्य के मध्य में विश्राम (Rest during work)
- ③ मनोरंजन जैसे संगीत (Music)

① प्रकाश की तीव्रता, स्थिति, वितरण एवं रंग (Intensity, Location Distribution & Colour of Light) :-

② प्रकाश की तीव्रता (Intensity of Light) :- विभिन्न आयु के व्यक्तियों के लिए प्रकाश की तीव्रता, विभिन्न प्रकार की भिन्न-भिन्न कामों में होनी चाहिए। सामान्यतया 35 वर्ष की आयु तक के व्यक्तियों को अपेक्षाकृत विशेष तीव्र प्रकाश की आवश्यकता पड़ती है। इसी प्रकार से कुछ बारीक कार्यों में भी तीव्र प्रकाश की आवश्यकता पड़ती है। इसके विपरीत मोट

कामों एवं कार्यों को तीव्र प्रकाश की आवश्यकता नहीं पड़ती है। आँसों के लिए प्रकाश का अधिक तेज होना तथा अधिक मन्द होना, दोनों ही हानिकारक होते हैं। इसीलिए-बिन कामों में तीव्र प्रकाश की आवश्यकता पड़ती है उनमें आँसों की रक्षा हेतु विशेष प्रकार के यंत्रों प्रयोग किए जाते हैं।

(i) प्रकाश की स्थिति (Location of Light) — हेती प्रकाश की स्थिति होनी चाहिए ताकि आँसों पर सीधे प्रकाश न पड़कर उस यंत्र पर पड़े जिससे काम लेता है। यंत्र पर भी इतनी तेज प्रकाश नहीं पड़नी चाहिए जिससे की यंत्रचौंध उत्पन्न हो जाये। इसी समान रूप से प्रकाश का वितरण होना चाहिए। जब के प्रकाश की स्फेदा सूत्र (Tube) का प्रकाश समान वितरण के लिए ठीक रहता है।

(ii) प्रकाश का वितरण (Distribution of Light) :- समान रूप से दिन में तो स्वयं ही प्रकाश का वितरण प्रकृति के द्वारा होता रहता है। प्रकाश के वितरण पर विशेष रूप से वहाँ पर ध्यान देना चाहिए जहाँ पर रात के समय काम होता है।

(iii) प्रकाश का रंग (Colour of Light) — अनुभव के द्वारा यह बात सिद्ध हो चुकी है कि जो प्रकाश दिन के प्रकाश से जितना ही अधिक मिलता-जुलता होगा वह आँसों के लिए उतना ही अच्छा होगा। इसलिए प्रकाश की तीव्रता, स्थिति एवं वितरण के साथ-साथ रंग के सम्बन्ध में भी ध्यान देना जरूरी है। आज़कल सूत्र का स्फेद प्रकाश सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। केवल इतका पीला प्रकाश रंगीन प्रकाश में उन्नत माना जाता है। अन्य सभी प्रकार के प्रकाश कुछ न कुछ आँसों को अप्रत्यक्ष हानि पहुँचाते हैं।

(4) वायुसंचार (Ventilation) :- कार्य करते समय शुद्ध वायु का मिलना नितान्त आवश्यक है। शुद्ध वायु वहीं मिलने पर कर्मचारियों में आलस एवं थकान की मात्रा बढ़ने लगती है। ऐसे कारखानों, खानों एवं कार्यालयों की वायु दूषित हो जाती है जहाँ पर अधिक समय तक ब्रु से व्यक्तिक काम करते हैं। उत; ऐसे स्थानों में वायु को बाहर फेंकने वाले पंखों का प्रयोग किया जाना चाहिए। काम करने के स्थान पर वायु का पर्याप्त प्रयत्न होना चाहिए।

Potfenberger के अनुसार जब वायु में 14% से कम ऑक्सीजन की मात्रा होने लगती है तभी इसमें काम करने कर्त्तों

पर बुरा प्रभाव पड़ने लगता है। शरीर के तापमान पर वायुसंचार (Ventilation) का भी प्रभाव पड़ता है। गर्मियों में तापमान को ठीक नहीं रहने देना है अगर वायुसंचार हीमाली रहता है। इसका परिणाम यह होता कि कर्मचारियों को बुस्ती (स्वेपहाउट) का अनुभव होने लगता है। वायु की नमी को शरीर का भी कर्मचारियों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

⑤ तापमान तथा आर्द्रता (Temperature & Humidity) कर्मचारियों के शारीरिक स्वास्थ्य पर काम करने के स्थान के तापमान का आवश्यक प्रभाव पड़ता है जहाँ पर आवश्यकता से कम तथा आवश्यकता से ज़्यादा तापमान होता है वहाँ पर कर्मचारी निश्चय रूप में बीमारियों एवं दुर्घटनाओं के शिकार होते रहते हैं। जहाँ पर उचित मात्रा में तापमान पाया जाता है वहाँ पर दुर्घटनाओं कम होती हैं तथा श्रमिकों का स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

ब्रिटेन के श्रमिकों के सम्बन्ध में H.M. Verghese ने कहा कि 75 डिग्री से अधिक तापमान होने पर दुर्घटनाओं में अधिक होती हैं। कर्मचारियों की अनुभूति पर भी तापमान का प्रभाव पड़ता है। तापमान के अधिक या कम होने पर काम करने वाले कर्मचारियों को श्रमिकों का सामना करना पड़ता है, जिसके प्रभाव कार्य के शुभ एवं मात्रा पर पड़ता है। कमरे में वायु के संचार पर भी तापमान का प्रभाव पड़ता है। वायु का संचार ठीक होने के लिए यह आवश्यक है कि कमरे में अत्युक्त तापमान ही।

वायुमण्डलीय दृष्टा में तापमान के साथ वायु में आर्द्रता (Humidity) (नमीपन) का भी भौतिक वातावरण के रूप में बड़ा महत्व है परन्तु इस दृष्टा में बहुत कम अध्ययन हुए हैं। कार्यकुशलता अन्य भौतिक परिवेशीय तत्वों के आलाप आर्द्रता से भी बहुत प्रभावित होता है। आर्द्रता का अध्ययन दृष्टा तापमान तथा वायुसंचार के साथ-साथ किया जाता है, जो भी कुछ इस दृष्टा में तथा मिले हैं इनसे यही परिणाम मिला है कि आर्द्रता जितनी कम है उत्पादन-कुशलता उतनी ही अधिक होती है। इससे न केवल अर्थन में बचाव होती है बल्कि मांसपेशियों का संतुलन भी रहता है इससे उत्पादन बढ़ जाता है। *Industrial Health Research Board (1940)* द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार सापेक्ष आर्द्रता 70% से अधिक नहीं होनी चाहिए। पर्याप्त वायु-संचार के द्वारा हवा में अनावश्यक आर्द्रता दूर होनी चाहिए।